एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा (बचेंद्री पाल)

पाठ का परिचय

मनुष्य प्रारंभ से ही प्रकृति का रहस्य जानने का इच्छुक रहा है। इसके लिए उसने सतत संघर्ष किया है। पर्वतारोहण एक बहुत ही साहसिक कार्य है, जिसमें अत्यंत साहस, धैर्य, संघर्षशीलता और समझदारी की आवश्यकता होती है। बचेंद्री पाल ने एवरेस्ट विजय की अपनी रोमांचक पर्वतारोहण-यात्रा का संपूर्ण विवरण स्वयं लिखा है। प्रस्तुत पाठ उसी का एक अंश है। यह लोमहर्षक अंश बचेंद्री के उस अंतिम पड़ाव से शिखर तक पहुँचकर तिरंगा लहराने के पल-पल का ब्योरा बयान करता है। इस पाठ को पढ़ते हुए ऐसा लगता है, मानो पाठक भी उनके कदम-से-कदम मिलाता हुआ सभी खतरों को खुद झेलता हुआ एवरेस्ट के शिखर पर जा रहा है।

पाठ का सारांश

एवरेस्ट अभियान का प्रारंभ–एवरेस्ट अभियान दल 7 मार्च को दिल्ली से काठमांडू के लिए हवाई जहाज़ से रवाना हुआ। दुर्गम हिमपात के रास्ते को साफ़ करने के लिए एक मज़बूत अग्रिम दल पहले ही चला गया था। शेरपालैंड के नगरीय क्षेत्र नमचे बाज़ार से लेखिका ने सर्वप्रथम एवरेस्ट को निहारा, जिसे नेपाली लोग 'सागरमाथा' कहते हैं। लेखिका को यह नाम बहुत अच्छा लगा। एवरेस्ट को गौर से देखने पर उन्हें एक भारी बरफ़ का बड़ा फूल (प्लूम) दिखाई दिया, जो पर्वत-शिखर पर लहराता एक ध्वज-सा लग रहा था। 26 मार्च को अभियान दल पैरिच पहुँच गया। वहाँ पहुँचकर पता चला कि शेरपा कुलियों के दल में से हिमपात के कारण एक की मृत्यु हो गई है। यह सुनकर सब उदास हो गए। दल के नेता कर्नल खुल्लर ने समझाया कि एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों को और कभी-कभी मृत्यु को भी स्वीकार करना पड़ता है।

उपनेता प्रेमचंद का सहयोग–उपनेता प्रेमचंद अग्रिम दल का नेतृत्व कर रहे थे। वे 26 मार्च को पैरिच लौट आए। उन्होंने लेखिका को खुंभु हिमपात की स्थिति से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि हिमपात के ऊपर कैंप-एक तक का रास्ता साफ़ कर दिया गया है, लेकिन हिमपात में अनियमित और अनिश्चित बदलाव के कारण अभी तक किए सभी काम व्यर्थ हो सकते हैं और हमें रास्ता खोलने का काम दोबारा करना पड़ सकता है। बेस कैंप में पहुँचने से पहले लेखिका को एक और मृत्यु की सूचना मिली। अनुकूल जलवायु न होने के कारण रसोई सहायक की मृत्यु हो गई थी।

शेरपा तेनजिंग से मुलाकात–एक दिन लेखिका के बेस कैंप में शेरपा तेनजिंग अपनी छोटी बेटी डेकी के साथ आए। उन्होंने सभी पर्वतारोहियों से अलग-अलग बात की। लेखिका ने जब बताया कि वह नौसिखिया है और एवरेस्ट पर उसका पहला अभियान है तो शेरपा तेनजिंग ने लेखिका की दृढ़ता एवं कर्मठता पर विश्वास जताते हुए उसकी सफलता की कामना की।

उन्होंने लेखिका का साहस बढ़ाते हुए उसे पक्की पर्वतीय लड़की बताया और कहा कि उसे पहले ही प्रयास में शिखर पर पहुँच जाना चाहिए। इससे लेखिका का उत्साह बढ़ा।

मृत्युतुल्य घटना–15-16 मई, 1984 को जब लेखिका अपने कैंप-तीन में गहरी नींद में सोई हुई थी, तभी बरफ़ की एक विशाल चट्टान उसके कैंप से आ टकराई। लेखिका कई फीट बरफ़ के नीचे दब गई। लेखिका के सहयोगी लोपसांग एवं तशारिंग उसके साथ तंबू में थे। लोपसांग ने अपनी स्विस छुरी की मदद से लेखिका के तंबू का रास्ता साफ़ किया और बड़ी तत्परता से वे लेखिका को बचाने के प्रयास में जुट गए। आस-पास जमे कड़े हिमपिंडों को खोदकर लोपसांग ने बड़ी मुश्किल से लेखिका को बरफ़ की कब्र से बाहर निकाला। लेखिका मौत के मुँह में जाते-जाते बची। कर्नल खुल्लर ने इस बचाव

साउथ कोल से एवरेस्ट के लिए अंतिम चढ़ाई–लेखिका के साथ जय तथा मीनू एवरेस्ट की इस महत्त्वपूर्ण चढ़ाई में सहयोगी थे, लेखिका साउथ कोल कैंप सबसे पहले पहुँच गई, परंतु साथियों की सहायता हेतु वह दुर्गम मार्ग पर पुनः वापस आई। लेखिका के सहयोगी उसके इस तरह वापस आने से हक्का-बक्का थे। अगले दिन 'पृथ्वी की बहुत अधिक कठोर जगह' के नाम से प्रसिद्ध साउथ कोल से लेखिका अंगदोरजी के साथ एवरेस्ट की अंतिम चढ़ाई के लिए तैयार हुई और अपने आरोहण मार्ग की बाधाओं को अत्यंत संयम, सहजता एवं कुशलता से पार करती हुई शिखर कैंप तक पहुँची। दक्षिणी शिखर के नीचे लेखिका को ल्हाटू मिला, जिसने लेखिका की सहायता की और उसके रेगुलेटर पर ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ाई। इससे शेष चढ़ाई में लेखिका को आसानी महसूस हुई।

बचेंद्री पाल की एवरेस्ट विजय–जमी हुई बरफ़ को काटते तथा बर्फ़ीली हवाओं का सामना करते हुए लेखिका 23 मई, 1984 के दिन दोपहर में एक बजकर सात मिनट पर एवरेस्ट की चोटी पर पहुँच गई। इस तरह लेखिका बचेंद्री पाल एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने वाली भारत की प्रथम महिला बन गई। लेखिका ने एवरेस्ट की चोटी पर माँ दुर्गा का चित्र तथा हनुमान चालीसा को एक कपड़े में लपेटकर बरफ़ के नीचे दबा दिया और अपने रज्जु-नेता अंगदोरजी का झुककर अभिनंदन किया। आनंद के इस क्षण में लेखिका को अपने माता-पिता का ध्यान आया। कर्नल खुल्लर समेत कई लोगों ने लेखिका को उसकी सफलता के लिए बधाई दी।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) एवरेस्ट अभियान दल 7 मार्च को दिल्ली से काठमांडू के लिए हवाई जहाज़ से चल दिया। एक मज़बूत अग्रिम दल बहुत पहले ही चला गया था, जिससे कि वह हमारे 'बेस कैंप' पहुँचने से पहले दुर्गम हिमपात के रास्ते को साफ़ कर सके। नमचे बाज़ार शेरपालैंड का एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नगरीय क्षेत्र है। अधिकांश शेरपा इसी स्थान तथा यहीं के आसपास के गाँवों के होते हैं। यह नमचे बाज़ार ही था, जहाँ से मैंने सर्वप्रथम एवरेस्ट को निहारा, जो नेपालियों में 'सागरमाथा' के नाम से प्रसिद्ध है। मुझे यह नाम अच्छा लगा।

1. एवरेस्ट अभियान दल ने किस दिन दिल्ली से प्रस्थान किया–
(क) 7 फरवरी को (ख) 7 मार्च को
(ग) 7 अप्रैल को (घ) 7 मई को।

2. अभियान दल दिल्ली से काठमांडू किस वाहन से पहुँचा–
(क) रेलगाड़ी से (ख) बस से
(ग) हवाई जहाज से (घ) कार से।

3. अग्रिम दल का क्या कार्य था–
(क) बेस कैंप बनाना
(ख) हिमपात के रास्ते साफ़ करना
(ग) भोजन का प्रबंध करना

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

4. **नमचे बाज़ार, शेरपालैंड का कैसा क्षेत्र है–**
(क) नगरीय क्षेत्र (ख) ग्रामीण क्षेत्र
(ग) व्यापारिक क्षेत्र (घ) औद्योगिक क्षेत्र।

5. **नेपालियों में एवरेस्ट किस नाम से प्रसिद्ध है–**
(क) हिमशिखर (ख) सागरमाथा
(ग) पर्वतमाथा (घ) धरतीमाथा।

उत्तर– 1. (ख) 2. (ग) 3. (ख) 4. (क) 5. (ख)।

(2) उपनेता प्रेमचंद, जो अग्रिम दल का नेतृत्व कर रहे थे, 26 मार्च को पैरिच लौट आए। उन्होंने हमारी पहली बड़ी बाधा खुंभु हिमपात की स्थिति से हमें अवगत कराया। उन्होंने कहा कि उनके दल से कैंप-एक (6000 मी.), जो हिमपात के ठीक ऊपर है, वहाँ तक का रास्ता साफ़ कर दिया है। उन्होंने यह भी बताया कि पुल बनाकर, रस्सियाँ बाँधकर तथा झंडियों से रास्ता चिह्नित कर, सभी बड़ी कठनाइयों का जायज़ा ले लिया गया है। उन्होंने इस पर भी ध्यान दिलाया कि ग्लेशियर बरफ़ की नदी है और बरफ़ का गिरना अभी जारी है। हिमपात में अनियमित और अनिश्चित बदलाव के कारण अभी तक के किए गए सभी काम व्यर्थ हो सकते हैं और हमें रास्ता खोलने का काम दोबारा करना पड़ सकता है।

1. **अग्रिम दल का नेतृत्व कौन कर रहा था–**
(क) कर्नल खुल्लर (ख) तेनजिंग
(ग) उपनेता प्रेमचंद (घ) एन०डी०शेरपा।

2. **उपनेता प्रेमचंद कब पैरिच लौटे–**
(क) 10 मार्च को (ख) 26 मार्च को
(ग) 30 मार्च को (घ) 2 अप्रैल को।

3. **कैंप-एक कितनी ऊँचाई पर था–**
(क) 5000 मीटर (ख) 4000 मीटर
(ग) 6000 मीटर (घ) 7000 मीटर।

4. **ग्लेशियर क्या है–**
(क) एक झरना (ख) एक घाटी
(ग) बरफ़ की नदी (घ) पर्वत-शिखर।

5. **उपनेता प्रेमचंद ने लेखिका के आरोही दल को क्या जानकारी दी–**
(क) कैंप-एक तक का रास्ता साफ़ कर दिया है।
(ख) पुल बनाकर, रस्सियाँ बाँधकर झंडियों से रास्ता चिह्नित कर दिया है।
(ग) सभी बड़ी कठिनाइयों का जायज़ा ले लिया गया है।
(घ) उपर्युक्त सभी।

उत्तर– 1. (ग) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ग) 5. (घ)।

(3) दूसरे दिन नए आनेवाले अपने अधिकांश सामान को हम हिमपात के आधे रास्ते तक ले गए। डॉ० मीनू मेहता ने हमें अल्यूमिनियम की सीढ़ियों से अस्थायी पुलों का बनाना, लट्ठों और रस्सियों का उपयोग, बरफ़ की आड़ी-तिरछी दीवारों पर रस्सियों को बाँधना और हमारे अग्रिम दल के अभियांत्रिकी कार्यों के बारे में हमें विस्तृत जानकारी दी। तीसरा दिन हिमपात से कैंप-एक सामान ढोकर चढ़ाई का अभ्यास करने के लिए निश्चित था। रीता गोंबू तथा मैं साथ-साथ चढ़ रहे थे। हमारे पास एक वॉकी-टॉकी था, जिससे हम अपने हर कदम की जानकारी बेस कैंप पर दे रहे थे। कर्नल खुल्लर उस समय खुश हुए, जब हमने उन्हें अपने पहुँचने की सूचना दी, क्योंकि कैंप-एक पर पहुँचनेवाली केवल हम दो ही महिलाएँ थीं।

1. **दूसरे दिन लेखिका और साथी अपने सामान को कहाँ तक ले गए–**
(क) कैंप-एक तक (ख) कैंप-दो तक
(ग) हिमपात के आधे रास्ते तक (घ) एवरेस्ट तक।

2. **डॉ० मीनू मेहता ने दल के सदस्यों को क्या जानकारी दी–**
(क) अल्यूमिनियम की सीढ़ियों से अस्थायी पुल बनाना
(ख) लट्ठों और रस्सियों का उपयोग करना
(ग) बरफ़ की दीवारों पर रस्सियों को बाँधना
(घ) उपर्युक्त सभी।

3. **तीसरा दिन किस कार्य के लिए निश्चित था–**
(क) आराम करने के लिए
(ख) खेलने के लिए
(ग) चढ़ाई का अभ्यास करने के लिए
(घ) कैंप बनाने के लिए।

4. **कौन साथ-साथ चढ़ रहे थे–**
(क) डॉ० मीनू मेहता और लेखिका (ख) लेखिका और रीता गोंबू
(ग) लोपसांग और तशारिंग (घ) ल्हाटू और बिस्सा।

5. **हर कदम की जानकारी बेस-कैंप में किसे दी जा रही थी–**
(क) कर्नल खुल्लर को (ख) उपनेता प्रेमचंद को
(ग) तेनजिंग को (घ) इनमें से किसी को नहीं।

उत्तर– 1. (ग) 2. (घ) 3. (ग) 4. (ख) 5. (क)।

(4) अंगदोरजी, लोपसांग और गगन बिस्सा अंततः साउथ कोल पहुँच गए और 29 अप्रैल को 7900 मीटर पर उन्होंने कैंप-चार लगाया। यह संतोषजनक प्रगति थी। जब अप्रैल में मैं बेस कैंप में थी, तेनजिंग अपनी सबसे छोटी सुपुत्री डेकी के साथ हमारे पास आए थे। उन्होंने इस बात पर विशेष महत्त्व दिया कि दल के प्रत्येक सदस्य और प्रत्येक शेरपा कुली से बातचीत की जाए। जब मेरी बारी आई, मैंने अपना परिचय यह कहकर दिया कि मैं बिलकुल ही नौसिखिया हूँ और एवरेस्ट मेरा पहला अभियान है। तेनजिंग हँसे और मुझसे कहा कि एवरेस्ट उनके लिए भी पहला अभियान है, लेकिन यह भी स्पष्ट किया कि शिखर पर पहुँचने से पहले उन्हें सात बार एवरेस्ट पर जाना पड़ा था। फिर अपना हाथ मेरे कंधे पर रखते हुए उन्होंने कहा, "तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो। तुम्हें तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए।"

1. **कौन अंततः साउथ कोल पहुँच गया–**
(क) अंगदोरजी (ख) लोपसांग
(ग) गगन बिस्सा (घ) ये सभी।

2. **कैंप-चार कब लगाया गया–**
(क) 29 अप्रैल को (ख) 10 अप्रैल को
(ग) 15 अप्रैल को (घ) 20 अप्रैल को।

3. **तेनजिंग किसके साथ लेखिका के पास आए–**
(क) अपने बड़े पुत्र के साथ।
(ख) अपनी बड़ी पुत्री के साथ।
(ग) अपनी छोटी पुत्री डेकी के साथ।
(घ) अपने मित्र के साथ।

4. **तेनजिंग को अपना परिचय देते हुए लेखिका ने स्वयं को क्या बताया–**
(क) विशेषज्ञ (ख) नौसिखिया
(ग) अल्पज्ञ (घ) अज्ञानी।

5. **शिखर पर पहुँचने से पहले तेनजिंग को कितनी बार एवरेस्ट पर जाना पड़ा था–**
(क) तीन बार (ख) चार बार
(ग) पाँच बार (घ) सात बार।

उत्तर– 1. (घ) 2. (क) 3. (ग) 4. (ख) 5. (घ)।

(5) एवरेस्ट शंकु की चोटी पर इतनी जगह नहीं थी कि दो व्यक्ति साथ-साथ खड़े हो सकें। चारों तरफ़ हज़ारों मीटर लंबी सीधी ढलान को देखते हुए हमारे सामने प्रश्न सुरक्षा का था। हमने पहले बरफ़ के फावड़े से बरफ़ की खुदाई कर अपने आपको सुरक्षित रूप से स्थिर किया। इसके बाद, मैं अपने घुटनों के बल बैठी, बरफ़ पर अपने माथे को लगाकर मैंने 'सागरमाथे' के ताज का चुंबन लिया। बिना उठे ही मैंने अपने थैले से दुर्गा माँ का चित्र और हनुमान चालीसा निकाला। मैंने इनको अपने साथ लाए लाल कपड़े में लपेटा, छोटी-सी पूजा-अर्चना की और इनको बरफ़ में दबा दिया। आनंद के इस क्षण में मुझे अपने माता-पिता का ध्यान आया।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

1. **एवरेस्ट शंकु पर कितने आदमियों के साथ खड़े होने की जगह नहीं थी–**
   (क) दो आदमियों के (ख) तीन आदमियों के
   (ग) चार आदमियों के (घ) पाँच आदमियों के।
2. **चारों तरफ़ क्या था–**
   (क) ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ
   (ख) हज़ारों मीटर लंबी सीधी ढलान
   (ग) हरे-भरे ऊँचे पेड़
   (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।
3. **लेखिका के सामने किस बात का प्रश्न था–**
   (क) ठंड से बचने का (ख) खड़े होने की जगह का
   (ग) सुरक्षा का (घ) भोजन का।
4. **लेखिका ने अपने थैले से क्या निकाला–**
   (क) खाने का सामान
   (ख) पूजा-पाठ की सामग्री
   (ग) कलम और नोटबुक
   (घ) दुर्गा माँ का चित्र और हनुमान चालीसा।
5. **आनंद के उन क्षणों में लेखिका को किसका ध्यान आया–**
   (क) अपने दादा-दादी का (ख) अपने माता-पिता का
   (ग) अपने गुरु का (घ) अपने अन्य साथियों का।

उत्तर– **1.** (क) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (ख)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. **'एवरेस्टः मेरी शिखर यात्रा' पाठ के लेखक का नाम है–**
   (क) धीरंजन मालवे (ख) बचेंद्री पाल
   (ग) शरद जोशी (घ) यशपाल।
2. **बचेंद्री पाल का जन्म उत्तराखंड के किस जिले में हुआ–**
   (क) हरिद्वार में (ख) अल्मोड़ा में
   (ग) चमोली में (घ) टिहरी में।
3. **बचेंद्री पाल का जन्म कब हुआ–**
   (क) 24 मई, 1964 को (ख) 24 मई, 1954 को
   (ग) 14 मई, 1962 को (घ) 20 मई, 1965 को।
4. **बचेंद्री पाल का नाम इतिहास में क्यों प्रसिद्ध है–**
   (क) वह पहली भारतीय पर्वतारोही थीं, जिसने एवरेस्ट पर विजय पाई
   (ख) वह पहली भारतीय आई०पी०एस० अधिकारी थी
   (ग) वह भारतीय क्रिकेट टीम की कप्तान थी
   (घ) वह भारत का पहली महिला राज्यपाल थी।
5. **बचेंद्री पाल किस अभियान में शामिल हुईं–**
   (क) पोलियो उन्मूलन अभियान में
   (ख) भारत स्वच्छता अभियान में
   (ग) इंडियन माउंटेन फाउंडेशन के एवरेस्ट अभियान में
   (घ) 'वृक्ष बचाओ' अभियान में।
6. **हिमालय पर्वत श्रृंखला में स्थित पर्वतों में से किसे 'सागरमाथा' के नाम से भी जाना जाता है–**
   (क) हिमालय को (ख) एवरेस्ट को
   (ग) कैलाश को (घ) नंदा देवी को।
7. **पर्वत शिखर पर फूल (प्लूम) कैसे बनता है–**
   (क) प्रकृति के द्वारा
   (ख) वर्षा होने के कारण
   (ग) 150 किलोमीटर से अधिक गति से बर्फीली हवाओं के चलने से
   (घ) ...
8. **हिमपुंज कैसे बनता है–**
   (क) प्लूम पर्वत शिखर के टूटे हिमखंडो से
   (ख) ग्लेशियर के टूटे हिमखंडों से
   (ग) ग्लेशियर के नीचे दब जाने से
   (घ) ग्लेशियर के ऊपर उठने से।
9. **लेखिका के यात्रा-दल के नेता कौन थे–**
   (क) प्रेमचंद (ख) तेनजिंग
   (ग) कर्नल खुल्लर (घ) डॉ मीनू मेहता।
10. **एवरेस्ट जैसे क्षेत्र में मनुष्य को कितने लीटर ऑक्सीजन की आवश्यकता पड़ती है–**
    (क) दो लीटर प्रति मिनट (ख) ढाई लीटर प्रति मिनट
    (ग) तीन लीटर प्रति मिनट (घ) चार लीटर प्रति मिनट।
11. **लेखिका के जीवन पर संकट किसके कारण टल पाया था–**
    (क) अंगदोरजी के कारण (ख) ल्हाटू के कारण
    (ग) लोपसांग के कारण (घ) कर्नल खुल्लर के कारण।
12. **किसके सहयोग से बचेंद्री पाल ने एवरेस्ट की चढ़ाई सफलतापूर्वक की थी–**
    (क) शेरपा कुली की सहायता से
    (ख) कर्नल खुल्लर की सहायता से
    (ग) अंगदोरजी की सहायता से
    (घ) ल्हाटू की सहायता से।
13. **लेखिका किस कारण अंगदोरजी के प्रति कृतज्ञ हो उठी थीं–**
    (क) आर्थिक सहायता देने के कारण
    (ख) आरोहण अभियान के विषय में जानकारी देने के कारण
    (ग) लक्ष्य तक पहुँचाने और प्रोत्साहित करने के कारण
    (घ) बरफ़ से निकालकर जान बचाने के कारण।
14. **जय, लेखिका को कहाँ मिला–**
    (क) प्लूम पर्वत शिखर पर
    (ख) खुंभु हिमपात पर
    (ग) जेनेवा स्पर की चोटी के नीचे
    (घ) पैरीच में।
15. **पैरिच पहुँचने पर क्या दुखद समाचार मिला–**
    (क) शेरपा कुली की मृत्यु का
    (ख) कैंप नष्ट होने का
    (ग) अभियान दल के सदस्य की मृत्यु का
    (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।
16. **लेखिका के साथ जानलेवा दुर्घटना कौन-से कैंप में घटित हुई–**
    (क) कैंप-एक (ख) कैंप-दो
    (ग) कैंप-तीन (घ) कैंप-चार।
17. **"तुमने इतनी बड़ी जोखिम क्यों ली बचेंद्री?"–यह कथन किसका है–**
    (क) डॉ० मीनू मेहता का (ख) उपनेता प्रेमचंद का
    (ग) जय का (घ) 'की' का।
18. **साउथ कोल पृथ्वी पर कैसी जगह के नाम से प्रसिद्ध है–**
    (क) बहुत कठोर जगह (ख) बहुत कोमल जगह
    (ग) बहुत ठंडी जगह (घ) बहुत गरम जगह।
19. **अंगदोरजी और लेखिका कितने समय में शिखर कैंप पहुँच गए–**
    (क) चार घंटे से कम समय में (ख) तीन घंटे से कम समय में
    (ग) दो घंटे से कम समय में (घ) एक घंटे से कम समय में।
20. **लेखिका ने किस दिन एवरेस्ट पर विजय प्राप्त की–**
    (क) 20 मई, 1984 को (ख) 10 मई, 1984 को
    (ग) 25 मई, 1984 को (घ) 23 मई, 1984 को।

उत्तर– **1.** (ख) **2.** (ग) **3.** (ख) **4.** (क) **5.** (ग) **6.** (ख) **7.** (ग) **8.** (ख) **9.** (ग) **10.** (घ) **11.** (ग) **12.** (ग) **13.** (ग) **14.** (ग) **15.** (क)

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

भाग-2

(वर्णनात्मक प्रश्न)

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : अग्रिम दल का नेतृत्व कौन कर रहा था?

उत्तर : अग्रिम दल का नेतृत्व उपनेता प्रेमचंद कर रहे थे।

प्रश्न 2 : 'सागरमाथा' क्या है? लेखिका ने इसे कहाँ से निहारा?

उत्तर : 'सागरमाथा' एवरेस्ट का ही नाम है, जो नेपालियों ने उसे दिया है। लेखिका ने शेरपालैंड के नमचे बाज़ार से उसे निहारा।

प्रश्न 3 : कैंप-चार किसके द्वारा कब और कहाँ लगाया गया?

उत्तर : कैंप-चार अंगदोरजी, लोपसांग और गगन बिस्सा द्वारा लगाया गया। यह कैंप साउथ कोल पर 29 अप्रैल को 7900 मीटर की ऊँचाई पर लगाया गया।

प्रश्न 4 : लेखिका को ध्वज जैसा क्या लगा?

उत्तर : लेखिका को एवरेस्ट में बरफ़ का एक भारी प्लूम दिखाई दिया, जो पर्वत-शिखर पर लहराता हुआ ध्वज-सा लगता था।

प्रश्न 5 : पर्वतारोही दल पैरिच कब पहुँचा? वहाँ उन्हें क्या दुःखद समाचार मिला?

उत्तर : पर्वतारोही दल 26 मार्च को पैरिच पहुँचा। वहाँ दल को हिमपात के कारण एक शेरपा कुली की मृत्यु का दुःखद समाचार मिला। इस घटना में चार शेरपा घायल भी हो गए थे।

प्रश्न 6 : रसोई सहायक की मृत्यु कैसे हुई?

उत्तर : रसोई सहायक की मृत्यु जलवायु अनुकूल न होने के कारण हो गई।

प्रश्न 7 : पर्वतारोही दल में किसने बिना ऑक्सीजन के चढ़ाई की?

उत्तर : पर्वतारोही दल में अंगदोरजी ने बिना ऑक्सीजन के एवरेस्ट की चढ़ाई की।

प्रश्न 8 : लेखिका बचेंद्री पाल ने किस दिन एवरेस्ट पर विजय प्राप्त की?

उत्तर : बचेंद्री पाल ने 23 मई, 1984 के दिन दोपहर एक बजकर सात मिनट पर एवरेस्ट पर विजय प्राप्त की। वह एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने वाली प्रथम भारतीय महिला थीं।

प्रश्न 9 : तेनजिंग बेस कैंप कब आए और उन्होंने किस बात को विशेष महत्त्व दिया?

उत्तर : तेनजिंग अप्रैल में बेस कैंप आए थे। उनके साथ उनकी छोटी पुत्री डेकी भी थी। उन्होंने इस बात को विशेष महत्त्व दिया कि दल के प्रत्येक सदस्य और प्रत्येक शेरपा कुली से बातचीत की जाए।

प्रश्न 10 : लेखिका को सागरमाथा नाम क्यों अच्छा लगा?

उत्तर : एवरेस्ट सागर के मस्तक जैसा प्रतीत होता है। नेपाली लोग इसे सागरमाथा कहते हैं। लेखिका को एवरेस्ट के लिए यह नाम बिलकुल उचित और अच्छा लगा।

प्रश्न 11 : लेखिका ने शेरपा कुली को अपना परिचय किस तरह दिया?

उत्तर : लेखिका ने शेरपा को बताया कि वह नौसिखिया है और यह एवरेस्ट अभियान पर उसका पहला प्रयास है।

प्रश्न 12 : लेखिका की सफलता पर कर्नल खुल्लर ने उसे किन शब्दों में बधाई दी?

उत्तर : लेखिका को बधाई देते हुए कर्नल खुल्लर ने कहा, "मैं तुम्हारी इस अनूठी उपलब्धि के लिए तुम्हारे माता-पिता को बधाई देना चाहूँगा।" उन्होंने कहा कि देश को तुम पर गर्व है और अब तुम ऐसे संसार में वापस जाओगी, जो तुम्हारे अपने पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम भिन्न होगा।

प्रश्न 13 : मृत्यु के अवसाद को देखकर कर्नल खुल्लर ने क्या कहा?

उत्तर : पर्वतारोहियों के मुख पर मृत्यु के अवसाद को देखकर कर्नल खुल्लर ने कहा कि एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों के साथ-साथ मृत्यु को भी सहज भाव से स्वीकार करना पड़ता है।

प्रश्न 14 : प्लूम का निर्माण कैसे होता है?

उत्तर : भारी बरफ़ का बड़ा फूल अर्थात् प्लूम वास्तव में शिखर की ऊपरी सतह के आस-पास 150 किमी अथवा इससे भी अधिक की गति से हवा चलने के कारण बनता है; क्योंकि तेज हवा से सूखी बरफ़ पर्वत पर उड़ती रहती है। यह पर्वत-शिखर पर लहराता एक ध्वज-सा लगता है और बरफ़ का यह ध्वज 10 किमी अथवा इससे भी लंबा हो सकता है। शिखर पर जाने वाले प्रत्येक व्यक्ति को दक्षिणी-पूर्वी पहाड़ी पर इन तूफ़ानों को झेलना पड़ता है, विशेषकर खराब मौसम में।

प्रश्न 15 : लेखिका को सपाट चढ़ाई चढ़ना सुगम क्यों लगा?

उत्तर : लेखिका चढ़ते-चढ़ते बहुत थक गई थीं। वह दक्षिण शिखर के नीचे थोड़ी देर आराम करने के लिए बैठ गईं। वहाँ बैठकर उसने थोड़ी चाय पी, जिससे ताज़गी महसूस हुई। आगे की चढ़ाई चढ़ते समय ल्हाटू ने रेगुलेटर से ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ा दी। इससे लेखिका को कठिन और सपाट चढ़ाई आसान लगने लगी।

प्रश्न 16 : लेखिका को अंगदोरजी की कौन-सी शर्त माननी पड़ी और क्यों?

उत्तर : अंगदोरजी की इच्छा, बिना ऑक्सीजन के एवरेस्ट शिखर पर चढ़ने की थी, लेकिन पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन न मिलने के कारण उनके पैर ठंडे पड़ जाते थे, इसलिए उन्होंने निर्णय किया कि वह एक ही दिन में एवरेस्ट पर चढ़ाई करके वापस साउथ कोल कैंप में लौट आएँगे। साउथ कोल कैंप से चोटी तक जाना व वापस आना एक बहुत ही कठिन व श्रमसाध्य कार्य था। अंगदोरजी ने अपने निर्णय के विषय में लेखिका को बताया और उसके समक्ष एक ही दिन में एवरेस्ट पर चढ़कर वापस लौटने की शर्त रखी। लेखिका को उनकी आरोहण-क्षमता व कर्मठता पर विश्वास था, इसलिए उसने उनकी शर्त को स्वीकारते हुए उनके साथ जाने का निर्णय किया।

प्रश्न 17 : नज़दीक से एवरेस्ट को देखकर लेखिका को कैसा लगा?

उत्तर : लेखिका ने पहले भी दो बार एवरेस्ट को देखा था, लेकिन नज़दीक से नहीं देखा था। बेस कैंप पहुँचकर जब उसने एवरेस्ट पर्वत और उसकी अन्य श्रेणियों को नज़दीक से देखा तो वह भौंचक्की होकर खड़ी रह गई और एवरेस्ट, ल्होत्से और नुत्से की ऊँचाइयों से घिरी बर्फ़ीली टेढ़ी-मेढ़ी नदी को निहारती रही।

प्रश्न 18 : लेखिका को किनके साथ चढ़ाई करनी थी?

उत्तर : लेखिका को साउथ कोल से आगे जय और मीनू के साथ चढ़ाई करनी थी; क्योंकि इस अभियान में ये दोनों उसके साथी थे। उन्हें उन दोनों की चिंता हो रही थी; क्योंकि वे पीछे रह गए थे।

प्रश्न 19 : 'सहयोग एवं सहायता की भावना के बिना सम्मिलित अभियान संभव नहीं है।' लेखिका ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर : परस्पर सहयोग एवं सहायता की भावना के बिना कोई भी सम्मिलित अभियान संभव नहीं हो सकता, लेखिका ने ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि उनके एवरेस्ट आरोहण में उन्हें दल के सभी सदस्यों का भरपूर सहयोग मिला। उपनेता प्रेमचंद, अंगदोरजी, लोपसांग, गगन बिस्सा, जय, की तथा डॉ० मीनू मेहता के साथ-साथ प्रत्येक शेरपा कुली का भी इसमें पूर्ण सहयोग था। तभी यह कठिन कार्य संभव हो सका।

प्रश्न 20 : तेनजिंग ने लेखिका की तारीफ़ में क्या कहा?

उत्तर : जब लेखिका ने तेनजिंग को अपना परिचय दिया और स्वयं को एक नौसिखिया पर्वतारोही बताया तो वे हँसे और लेखिका के कंधे पर हाथ रखकर उनकी तारीफ़ करते हुए कहा, "तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो। तुम्हें तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए।"

प्रश्न 21 : एवरेस्ट शिखर पर पहुँचकर सुरक्षा का प्रश्न सामने क्यों आया?

उत्तर : एवरेस्ट शिखर पर पहुँचकर सुरक्षा का प्रश्न इसलिए सामने आया; क्योंकि वहाँ इतनी भी जगह नहीं थी कि एक आदमी भी टिककर खड़ा हो सके। इसलिए लेखिका ने वहाँ पहुँचकर पहले फावड़े से बरफ़ को समतल किया और स्वयं को सुरक्षित किया।

प्रश्न 22 : उपनेता प्रेमचंद ने किन स्थितियों से अवगत कराया?

उत्तर : उपनेता प्रेमचंद ने पहली बड़ी बाधा खुंभु हिमपात की स्थिति से लेखिका एवं अन्य लोगों को अवगत कराया। उन्होंने बताया कि उनके दल ने कैंप-एक (6000 मी०), जो हिमपात के ठीक ऊपर

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

था, तक का मार्ग साफ़ कर दिया है, साथ ही पुल बनाकर, रस्सियाँ बाँधकर तथा झंडियों से रास्ता चिह्नित कर सभी बड़ी कठिनाइयों का जायज़ा ले लिया गया है। उन्होंने याद दिलाया कि ग्लेशियर बरफ़ की नदी है और बरफ़ का गिरना जारी है। हिमपात में बदलाव के कारण अभी तक के सारे काम व्यर्थ हो सकते हैं तथा रास्ता खोलने का काम दोबारा करना पड़ सकता है।

प्रश्न 23 : ल्हाटू कौन था? पर्वतारोहण में उसकी क्या भूमिका रही?

उत्तर : ल्हाटू लेखिका के पर्वतारोही दल का महत्त्वपूर्ण सहायक था। नायलॉन की रस्सी लेकर साथ-साथ चलने वाले ल्हाटू ने ही रस्सी के सहारे चलने का प्रबंध किया।

वह पर्वत-शिखर पर चढ़ते समय लेखिका बचेंद्री पाल तथा अंगदोरजी के बीचोबीच चलता रहा और उसने अपनी सुविधा का ध्यान न रखकर इन दोनों के संतुलन को बनाए रखने की पूरी कोशिश की। उसने लेखिका की ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ा दी, जिससे सपाट और कठिन चढ़ाई लेखिका को आसान लगने लगी। ल्हाटू ने ही लेखिका के पर्वत-शिखर पर पहुँचने पर कर्नल खुल्लर को वॉकी-टॉकी से इसकी सूचना दी।

प्रश्न 24 : हिमपात किस तरह होता है और उससे क्या-क्या परिवर्तन आते हैं?

उत्तर : हिमपात अपने आप में एक तरह से बरफ़ के खंडों का अव्यवस्थित ढंग से गिरना है। ग्लेशियर के बहने से अकसर बरफ़ में हलचल हो जाती है, जिससे बड़ी-बड़ी बरफ़ की चट्टानें तत्काल गिरने लगती हैं। ये अचानक प्रायः खतरनाक स्थिति धारण कर लेती हैं। धरातल पर दरारें पड़ जाती हैं, जो गहरे-चौड़े हिम-विदर में बदल जाती हैं। ये बहुत ही खतरनाक होती हैं। इनमें गिरकर बहुत-से पर्वतारोहियों की जानें चली जाती हैं।

प्रश्न 25 : लेखिका को देखकर 'की' हक्का-बक्का क्यों रह गया?

उत्तर : लेखिका को अपने दल के अन्य सदस्यों जय, की तथा मीनू के साथ चढ़ाई करनी थी। चूँकि लेखिका साउथ कोल अपने सहयोगियों से पहले पहुँच गई थी, इसलिए वह अपने साथियों की सहायता हेतु पुनः दुर्गम पहाड़ियों से नीचे उतरी। जब वह 'की' के सामने पहुँची, तो वह यह देखकर हक्का-बक्का रह गया कि लेखिका इतने दुर्गम रास्तों को पारकर यहाँ दोबारा आ पहुँची है।

प्रश्न 26 : डॉ० मीनू मेहता ने क्या जानकारियाँ दीं?

उत्तर : डॉ० मीनू मेहता ने लेखिका और अन्य साथियों को अल्यूमिनियम की सीढ़ियों से अस्थायी पुलों का बनाना, लट्ठों और रस्सियों का उपयोग करना, बरफ़ की आड़ी-तिरछी दीवारों पर रस्सियों को बाँधना और अग्रिम दल के अभियांत्रिकी कार्यों के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

प्रश्न 27 : एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए कुल कितने कैंप बनाए गए? उनका वर्णन कीजिए।

उत्तर : एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए कुल पाँच कैंप बनाए गए। पहला कैंप बेस कैंप था, जो काठमांडू के शेरपालैंड में लगाया गया। इसका संचालन कर्नल खुल्लर कर रहे थे। इसके अतिरिक्त कैंप-एक, कैंप-दो, कैंप-तीन तथा कैंप-चार थे। कैंप-एक हिमपात से ऊपर 6000 मीटर की ऊँचाई पर था। कैंप-दो में शेरपा के पैर की हड्डी टूट गई, उसे स्ट्रेचर पर लिटाया गया। कैंप-तीन ल्होत्से पहाड़ियों के आँगन में स्थित था। कैंप-चार समुद्र तट से 7900 मीटर की ऊँचाई पर स्थित था। अंतिम दिन की चढ़ाई के लिए साउथ कोल पर शिखर कैंप बनाया गया।

प्रश्न 28 : साउथ कोल कैंप पहुँचकर लेखिका ने अगले दिन की महत्त्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी कैसे शुरू की?

उत्तर : साउथ कोल पहुँचकर लेखिका ने अगले दिन की सबसे महत्त्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी शुरू कर दी। उन्होंने खाना, कुकिंग गैस तथा कुछ ऑक्सीजन सिलिंडर इकट्ठे किए। एक थरमस में जूस और दूसरे में गर्म चाय भरी। फिर वह की, जय और मीनू का इंतज़ार करने

प्रश्न 29 : चढ़ाई के समय एवरेस्ट की चोटी की स्थिति कैसी थी?

उत्तर : एवरेस्ट की चोटी पर जमी हुई बरफ़ की सीधी एवं ढलाऊ चट्टानें इतनी सख्त और भुरभुरी थीं मानो शीशे की चादरें बिछी हों। लेखिका को बरफ़ काटने के लिए फावड़े का प्रयोग करना पड़ा। जमी बरफ़ इतनी सख्त थी कि फावड़ा काफ़ी ताकत से चलाना पड़ता था। ऊँचाई पर तेज़ हवा के झोंके भुरभुरी बरफ़ के कणों को चारों ओर उड़ा रहे थे, जिससे दृश्यता शून्य तक पहुँच गई थी।

प्रश्न 30 : अंगदोरजी एक ही दिन में साउथ कोल से एवरेस्ट शिखर पर चढ़कर वापस क्यों आना चाहते थे?

उत्तर : अंगदोरजी पर्वत पर चढ़ने के लिए ऑक्सीजन का प्रयोग नहीं करना चाहते थे। बिना ऑक्सीजन के लंबे समय तक खुले में और रात में उनके पाँव ठंडे पड़ जाते थे। इसलिए वे चाहते थे कि दिन-ही-दिन में चढ़ाई करें और रात को वापस आ जाएँ।

प्रश्न 31 : सम्मिलित अभियान में सहयोग एवं सहायता की भावना का परिचय बचेंद्री के किस कार्य से मिलता है?

उत्तर : पर्वतारोहण बहुत ही कठिन कार्य है। यह सहयोग और परस्पर सहायता के बिना संभव नहीं हो सकता। आरोही दल के प्रत्येक सदस्य में यह भावना होनी चाहिए। बचेंद्री पाल में यह भावना कूट-कूटकर भरी थी। उन्होंने आरोहण क्षमता के साथ-साथ सहयोग की भावना का भी प्रदर्शन किया। बचेंद्री अपने सहयोगियों के प्रति बेहद समर्पित थीं। साउथ कोल कैंप पर पहले पहुँच जाने के पश्चात् भी बचेंद्री पीछे आ रहे अपने सहयोगियों जय, 'की' तथा मीनू की सहायता हेतु उस दुर्गम मार्ग से पुनः वापस आईं और उनकी सहायता की। तीनों बचेंद्री के इस साहस को देख गद्गद हो गए।

प्रश्न 32 : जीवन में साहस एवं लगन की भूमिका सफलता प्राप्त करने की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। 'एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : सफलता-प्राप्ति के लिए जीवन में साहस एवं लगन की महत्त्वपूर्ण भूमिका असंदिग्ध है। लेखिका की सफलता इसका जीवंत प्रमाण है। लेखिका की एवरेस्ट यात्रा के दौरान उसके जीवन पर भी संकट आ गया। थोड़ी देर के लिए वह भयभीत भी हुई, लेकिन अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति एवं लगन के कारण वह इससे बाहर निकलने में सफल रही। उसने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मार्ग की इन बाधाओं को अधिक महत्त्व नहीं दिया। वह अत्यंत आत्मविश्वास के साथ अपने लक्ष्य की प्राप्ति में धैर्य के साथ जुटी रही और अंततः सफलता ने उसके चरण चूमें।

लेखिका के धैर्य एवं लगन की परीक्षा पूरे अभियान के दौरान बार-बार होती रही और वह परीक्षा में खरी उतरती गई। उसने दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण ही अंगदोरजी के साथ शिखर को छूने की योजना बनाई, जिसमें उसे दिन के समय में ही कैंप से शिखर तक पहुँचना एवं शिखर से वापस कैंप तक लौटना आवश्यक था; क्योंकि अंगदोरजी रात के समय में खुले बरफ़ के बीच नहीं रह सकता था। लेखिका के साहस एवं आत्मविश्वास का ही परिणाम था कि वह अपने इस उद्देश्य में सफल हुई और उसने एक नया इतिहास रच दिया।

प्रश्न 33 : 'एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों को और कभी-कभी तो मृत्यु भी आदमी को सहजभाव से स्वीकार करनी चाहिए।' आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **आशय**–यह पंक्ति कर्नल खुल्लर ने पर्वतारोही दल का उत्साह बढ़ाने के लिए कही है। इसका आशय यह है कि जैसे ही लेखिका और उसके सहयोगी पर्वतारोहियों को यह पता चला कि हिमस्खलन से शेरपा कुलियों के दल में से एक की मृत्यु हो गई और चार घायल हो गए तो सबके मुख पर मृत्यु का अवसाद नज़र आने लगा।

कर्नल खुल्लर ने पर्वतारोही दल का उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि एवरेस्ट को जीतना दुनिया को जीतना है। यह एक महत्त्वपूर्ण एवं दुःसाध्य अभियान है। इस अभियान में जान को भी खतरा रहेगा।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

सफलता को प्राप्त करने के लिए मृत्यु को भी स्वीकार करना पड़ सकता है। सच्चा पर्वतारोही इस सत्य के साथ ही अपना अभियान प्रारंभ करता है।

प्रश्न 34 : एवरेस्ट अभियान में लेखिका के साथ जो मृत्युतुल्य घटना घटित हुई, उसका वर्णन करते हुए बताइए कि किसने उनकी जान बचाई?

उत्तर : लेखिका बचेंद्री पाल सुंदर रंगीन नायलॉन के बने तंबू के कैंप-तीन में गहरी नींद में सोई हुई थीं कि रात में लगभग 12:30 बजे उनके सिर के पिछले हिस्से में किसी सख्त चीज़ के टकराने से उनकी नींद खुल गई और तभी एक ज़ोरदार धमाका भी हुआ। उन्होंने महसूस किया कि एक ठंडी एवं भारी चीज़ उनके शरीर पर से उन्हें कुचलती हुई चल रही है, जिससे उन्हें साँस लेने में भी कठिनाई हो रही है।

वास्तव में एक लंबा बरफ़ का पिंड उनके कैंप के ठीक ऊपर ल्होत्से ग्लेशियर से टूटकर नीचे आ गिरा था और एक विशाल हिमपुंज बन गया था। उस हिमपुंज ने उनके कैंप को तहस-नहस कर दिया था और हर व्यक्ति को चोट पहुँचाई थी।

लोपसांग अपनी स्विस छुरी की मदद से उनके तंबू का रास्ता साफ़ करने में सफल हो गए थे। बड़े-बड़े हिमपिंडों को कठिनाई से हटाते हुए उन्होंने लेखिका बचेंद्री पाल के चारों तरफ़ जमी कड़ी बरफ़ की खुदाई की और उसे बरफ़ की कब्र से निकालकर बाहर लाने में सफल रहे। इस प्रकार लोपसांग ने लेखिका के सामने खड़े मृत्यु के संकट से उसकी रक्षा की।

प्रश्न 35 : अधिक हिमपात होने से किस प्राकृतिक त्रासदी का सामना करना पड़ता है? इसका शिकार कौन लोग अधिक होते हैं?

उत्तर : पर्वतारोहियों को अकसर हिमपात के कारण अनेक परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं। यात्रा के दौरान कभी भी हिमपात के कारण हिम-स्खलन हो सकता है। हिम-स्खलन से बरफ़ की चट्टानें नीचे गिर सकती हैं, इस आपदा का शिकार सबसे अधिक पर्वतारोही होते हैं। इससे पर्वतारोहियों को चोट लग सकती है। वे बरफ़ के नीचे दबकर मर भी सकते हैं। कभी-कभी हिमपात के कारण चारों तरफ़ बरफ़ की आँधी चलने लगती है। उससे पर्वतारोहियों को कुछ भी दिखना बंद हो जाता है और आगे का रास्ता ठीक से नहीं सूझता, जिससे कोई भी दुर्घटना हो सकती है।

भारी हिमपात होने के कारण मार्ग में लगाए गए संकेतक या निशान, झंडियाँ आदि नष्ट हो जाते हैं। कभी-कभी तो चढ़ाई के लिए बनाया गया पूरा रास्ता ही नष्ट हो जाता है। अधिक हिमपात होने से ठंड का प्रभाव बढ़ जाता है और हिमपात के साथ तेज़ हवा उनके शरीर को बेंधने लगती है, जिससे उनकी सोची-समझी रणनीति व्यर्थ हो जाती है। सामान्य मौसम पर्वतारोहियों के लिए अधिक उपयुक्त होता है, लेकिन हिमपात होने से उनकी समस्याएँ काफ़ी अधिक बढ़ जाती हैं।

प्रश्न 36 : लेखिका ने एवरेस्ट विजय करते ही किस-किसको श्रद्धापूर्वक नमन किया?

उत्तर : (i) लेखिका एवरेस्ट शंकु की चोटी पर पहुँचते ही भावुक हो गई। वह घुटनों के बल बैठ गई और बरफ़ पर अपने माथे को लगाकर 'सागरमाथे' के ताज का चुंबन किया।

(ii) अपने थैले से माँ दुर्गा का चित्र और हनुमान चालीसा निकालकर उन्हें लाल कपड़े में लपेटा और उनकी पूजा-अर्चना करके इनको बरफ़ में दबा दिया।

(iii) आनंद के इन क्षणों में उन्होंने अपने माता-पिता का ध्यान किया और उन्हें नमन किया।

(iv) उठकर उन्होंने हाथ जोड़े और रज्जु-नेता अंगदोरजी के प्रति बहुत ही आदरभाव से झुकीं। उन्होंने उनका धन्यवाद किया और कहा कि आपके प्रोत्साहन ने ही मुझे लक्ष्य तक पहुँचाया है।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश– *निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

उपनेता प्रेमचंद, जो अग्रिम दल का नेतृत्व कर रहे थे, 26 मार्च को पैरिच लौट आए। उन्होंने हमारी पहली बड़ी बाधा खुंभु हिमपात की स्थिति से हमें अवगत कराया। उन्होंने कहा कि उनके दल से कैंप-एक (6000 मी.), जो हिमपात के ठीक ऊपर है, वहाँ तक का रास्ता साफ़ कर दिया है। उन्होनें यह भी बताया कि पुल बनाकर, रस्सियाँ बाँधकर तथा झंडियों से रास्ता चिह्नित कर, सभी बड़ी कठनाइयों का जायज़ा ले लिया गया है। उन्होंने इस पर भी ध्यान दिलाया कि ग्लेशियर बरफ़ की नदी है और बरफ़ का गिरना अभी जारी है। हिमपात में अनियमित और अनिश्चित बदलाव के कारण अभी तक के किए गए सभी काम व्यर्थ हो सकते हैं और हमें रास्ता खोलने का काम दोबारा करना पड़ सकता है।

1. अग्रिम दल का नेतृत्व कौन कर रहा था–

(क) कर्नल खुल्लर (ख) तेनजिंग
(ग) उपनेता प्रेमचंद (घ) एन०डी०शेरपा।

2. उपनेता प्रेमचंद कब पैरिच लौटे–

(क) 10 मार्च को (ख) 26 मार्च को
(ग) 30 मार्च को (घ) 2 अप्रैल को।

3. कैंप-एक कितनी ऊँचाई पर था–

(क) 5000 मीटर (ख) 4000 मीटर
(ग) 6000 मीटर (घ) 7000 मीटर।

4. ग्लेशियर क्या है–

(क) एक झरना (ख) एक घाटी
(ग) बरफ़ की नदी (घ) पर्वत-शिखर।

5. उपनेता प्रेमचंद ने लेखिका के आरोही दल को क्या जानकारी दी–

(क) कैंप-एक तक का रास्ता साफ़ कर दिया है।
(ख) पुल बनाकर, रस्सियाँ बाँधकर झंडियों से रास्ता चिह्नित कर दिया है।
(ग) सभी बड़ी कठिनाइयों का जायज़ा ले लिया गया है।
(घ) उपर्युक्त सभी।

निर्देश– *निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

6. बचेंद्री पाल का जन्म उत्तराखंड के किस जिले में हुआ–

(क) हरिद्वार में (ख) अल्मोड़ा में
(ग) चमोली में (घ) टिहरी में।

7. ''तुमने इतनी बड़ी जोखिम क्यों ली बचेंद्री?''– यह कथन किसका है–

(क) डॉ० मीनू मेहता का (ख) उपनेता प्रेमचंद का
(ग) जय का (घ) 'की' का।

8. लेखिका ने किस दिन एवरेस्ट पर विजय प्राप्त की–

(क) 20 मई, 1984 को (ख) 10 मई, 1984 को
(ग) 25 मई, 1984 को (घ) 23 मई, 1984 को।

निर्देश– *निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. लेखिका बचेंद्री पाल ने किस दिन एवरेस्ट पर विजय प्राप्त की?

10. लेखिका को अंगदोरजी की कौन-सी शर्त माननी पड़ी और क्यों?

11. तेनजिंग ने लेखिका की तारीफ़ में क्या कहा?

12. ल्हाटू कौन था? पर्वतारोहण में उसकी क्या भूमिका रही?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in